ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 74 बुलेटिन अवधिः 23–27 सितम्बर, 2017 दिन शुक्रवार दिनाँकः 22 सितम्बर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल**				
	23–09–2017	**24–09–2017**	**25–09–2017**	**26–09–2017**	**27–09–2017**
वर्षा (मिमी0)	70	25	10	5	5
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	19	20	21	21	22
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	13	13	14	14
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	90	90	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	60	55
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	008	006	006	006
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**15** से **21 सितम्बर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 16.4 से 24.2 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 13.7 से 15.3 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्ष

फसल प्रबन्धः

- ❖ किसान भाई खेत तैयार कर तोरिया फसल की प्रजातियों पी0टी0 303, पी0टी0 30, पी0टी0 30, पी0टी0 507, भवानी व वी0एल0 तोरिया 3 की बुवाई करें।
- ❖ तोरिया की बुवाई हेतु बीज दर 5 कि0ग्रा0/है0 तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30से0मी0 रखें।
- ❖ तोरिया की बुवाई सितम्बर के द्वितीय पखवाड़े में करें।
- ❖ बीज उपचार हेतु थायरम 2.5 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज या मैनकोजेब 3 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज से उपचारित करें।

- ❖ तोरिया हेतु 90 कि0ग्रा0 नत्रजन, 40 कि0ग्रा0 फास्फोरस एवं 20 कि0ग्रा0 पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करें। बुवाई के 20–25 दिन बाद नत्रजन की शेष बची आधी मात्रा का प्रयोग करें।
- ❖ धान की फसल में निचली पत्तियों के सूखने के लक्षण दिखाई पड़ने पर कार्बेंडाजिम 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 1 किलो ग्राम /है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ दलहनी फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा जल निकासी की उचित व्यवस्था करे।
- ❖ गन्ने के तीन झुण्डों को को आपस में मिलाकर बधाई करें।
- ❖ मक्के की पत्तियो पर लाल रंग के अण्डाकार धब्बे दिखाई पडने पर मेन्कोजेब 1.5 किग्रा0 का घील बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।
- ❖ धान फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा पानी रोकने की उचित व्यवस्था करे।
- ❖ धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रों में आलू की अगेती प्रजाति की बुवाई माह के अंतिम सप्ताह में करें।
- ❖ मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में मटर, मूली, बंदगोभी, फूलगोभी एवं ब्रोकली की फसल में गुड़ाई के पश्चात् अस्थानीय पलवारों का प्रयोग करें ताकि वर्षा, नमी का संरक्षण हो सके।
- ❖ घरेलू खपत के लिए सिंचित दशाओं में बंदगोभी की अगेती प्रजातियों एवं फूलगोभी की स्नोबॉल प्रजातियों का प्रतिरोपण करें।
- ❖ अरबी की फसल में पत्तियों पर भूरे गोलाकार धब्बे दिखाई देने पर एवं फसल की झुलसने की दशा में मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 या मैटलैग्जिम 8 प्रतिशत + मैनकोजेब 64 प्रतिशत का 2.5 कि0ग्रा0/है0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। घोल में व्यवसायिक स्टीकर 0.5 मि0ली0/लीटर की दर से मिलाना सुनिश्चित करें।
- ❖ असिंचित मध्यम ऊंचे क्षेत्रों में मूली की प्रजाति जैसे मीनू अर्ली, जपानी वाईट, पूसा हिमानी एवं शलजम की अगेती प्रजाति परपिलटाप, वाईट ग्लो, की तुरंत बुवाई करें।
- ❖ आलू की खड़ी फसल में जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें तथा उपर्युक्त नमी की दशा में खुदाई कर कंदो को बजार में बेचें।
- ❖ यदि बन्दगोभी, फूलगोभी, मूली एवं शलजम आदि सब्जियों की यदि पूर्व में बुवाई/प्रतिरोपित की गई हो तथा फसल लगभग तैयार है तो कटाई कर बाजार में बिक्री करें।
- ❖ यदि पॉलिहाउस इस समय खाली हो तो उनकी सफाई कर आने वाले समय में (10–15 दिन के भीतर) शलजम, इनागिरी मूली, फ्रासबीन, मटर की बुवाई करें। सब्जी राई की पहले पौध तैयार करें तद्पश्चात् 25–30 दिन के भीतर पौध प्रतिरोपण करें।
- ❖ पर्वतीय क्षेत्रों में असिंचित दशा में मूली एवं राई की बुवाई करें।
- ❖ शीतोष्ण फलों में, तनों तथा टैहनियों पर लाइकेन की पपड़ी को हटाने के लिए 1 प्रतिशत कास्टिक सोडा का छिड़काव करें।
- ❖ सदाबहार फल पौधों जैसे आम, अमरूद, नींबू, पपीता, लीची आदि फल पौधों को लगायें।
- ❖ बागीचों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
- ❖ इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्यामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।

- प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर